E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2023; 5(1): 182-184
Received: 28-03-2023
Accepted: 30-04-2023

Chandra Prakash Meena
Research Scholar,
Department of History,
Mohan Lal Shukhadia University, Udaipur,
Rajasthan, India

Corresponding Author:
Chandra Prakash Meena
Research Scholar,
Department of History,
Mohan Lal Shukhadia University, Udaipur,
Rajasthan, India

गोडवाड़ का मीणा इतिहास

Chandra Prakash Meena

सारांश
इस प्रस्तुत शोध–पत्र में मारवाड़–गोडवाड़ क्षेत्र मे बसी प्राचीन मीणा जनजाति के गौरवमयी इतिहास को उल्लेखित करता है। राजपूतो के आगमन से पूर्व यह क्षेत्र यहॉ के मूल निवासियो के अधिकार क्षेत्र मे था। हालांकि इन मूलनिवासियो का अधिकार क्षेत्र स्थानीय एवं सीमित था। इनकी अपनी समृद्ध सस्कृंति व परम्पराऍ मौजूद थी। मूलनिवासी मीणा इतने शिक्षित नही थे कि अपने गौरवमयी इतिहास को लिखवा सके या शिलालेख पर उत्कीर्ण करवा सके। इनका इतिहास मौखिक परम्परा पर आधारित पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांरित होता था ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार वेदो का ज्ञान श्रुति पर आधारित था। मीणाओ की वीरता और धीरता के इतिहास को दबाया नही जा सका और आधुनिक इतिहासकारो को अनायास ही इतिहास लेखनी मे मीणाओ को स्थान देना पड़ा क्योंकि सत्य को कितना भी दबाओ बाहर निकल ही आता है। समय के चक्र ने मीणाओ को पूर्व के शासक,मध्यकाल के चोर–डाकू, आधुनिक काल के खेतिहर मजदूर बनने के लिए मजबूर किया लेकिन इनके प्रमुख गुण ''वीरता'' को इनसे कोई नही छीन सका जो आज भी इनके खून मे मौजूद है। प्राचीनकाल में इसी वीरता वाले गुणो के कारण मूलनिवासी मीणाओ ने अपने छोटे–बड़े राज्य स्थापित किये। राजपूतो के आगमन के साथ ही एक–एक कर मीणाओ से उनकी सत्ता छीन ली गई। इन्होने जंगलो को अपनी शरणस्थली बनाया और अपने ''मेवासे'' स्थापित किये। इन्होने सुखः की बजाय दुखः अर्थात् अधीनता की बजाय संघर्ष का रास्ता अपनाया जिसे कालांतर मे महाराणा प्रताप जैसे महान शासक ने भी चुना और यही नियति को स्वीकार था। यहॉ के शासको को हमेशा चुनौती देते रहे, अंग्रेजो के तोप व बंदूको ने मीणाओ को नियत्रंण मे किया लेकिन इनकी स्वच्छन्दता को आज तक कोई काबू मे नही कर पाया। इसी बहादुरी के कारण अंग्रेजो ने मीणाओ को फौज मे भर्ती करने के लिए एरिनपुरा छावणी मे विषेष भर्ती की गई।

कुटशब्दः मारवाड़–जोधपुर संभाग, गोडवाड़–पाली, जालोर, सिरोही क्षेत्र, मीना–मीणा, मूलनिवासी–आदिवासी, चौहान–राजपूतो की शाखा, मेवासा–मीणाओ के रहने का स्थान

भूमिका
राजस्थान राज्य के मारवाड़ क्षेत्र का उपभाग जिसमें पाली जालोर सिरोही के भाग सम्मिलित है उसे गोडवाड़ क्षेत्र कहते है। यद्यपि इसे निश्चित सीमा के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है। यह क्षेत्र अरावली के सहारे पश्चिम क्षेत्र में स्थित है। इस क्षेत्र में पाली जिले के देसूरी, नाडोल, घाणेराव, रानी, बाली, सुमेरपुर तहसील व जालोर जिले में आहोर व जालोर तहसील व उत्तरी सिरोही जिले का क्षेत्र इसमें शामिल किया जा सकता है। मध्यकाल में मेवाड़ व मारवाड़ के मध्य सामरिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण क्षेत्र था।
गोडवाड़ क्षेत्र के नामकरण को लेकर विभिन्न किवदन्तिया प्रचलित है। जैसे गोडवाड़ में 'गोड़' का अपभ्रंश शब्द गोद लेकर इसे अरावली पर्वत की गोद में बसा हुआ बताकर इससे गोडवाड़ का नामकरण करते है तो दूसरी तरफ गोंद अधिक प्राप्त होने के कारण इसका नामकरण गोडवाड़ क्षेत्र से जोड़ते है। इतिहासकारो ने शब्दो को तोड़–जोड़ कर पेश किया है जो तर्कविहिन अवधारणाऍ है। इतिहासकार श्री रमेशचन्द्र गुणार्थी ने अपनी पुस्तक 'राजस्थानी जातियो की खोज' में लिखा है कि गोड़वाड़ : गोडवाड़ में देसूरी और नाडोल पर गोड जाति के मीनो का अधिकार हो गया था, मगर मेवाड़ के महाराणा रायमल के पुत्र पृथ्वीराज ने ठिकाने छीन लिये।''[1]
इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि गोडवाड़ का नामकरण प्राचीन गोड गोत्रिय मीनाओ के लम्बे समय तक अधीन रहने के कारण यह क्षेत्र गोडवाड़ कहलाया। दूसरे साक्ष्य के रूप में अन्य इतिहासकार शंकरलाल मीणा के शब्दो में – ''गोडवाड़ का नामकरण भी गोड़ मीना शाखा के लम्बे समय तक रहे आधिपत्य या दीर्घकाल से गोड़ मीना शाखा के प्रभुत्व के कारण ही प्रचलन में आया था।''[2]

वर्तमान में गोडवाड़ में बसी मीणा जनजाति इसकी प्राचीनता का साक्ष्य प्रस्तुत करती है। कर्नल टॉड, श्यामलदास व राजस्थान के कई इतिहासकारो की मान्यता के अनुसार मेर, मेद, मेव, मीना आदि जातियाँ मूल रूप में एक ही रही है।[3]

मीणा जनजाति भारतवर्ष एवं राजस्थान की प्राचीनतम जनजाति है। इतिहास के तूफानो में इन्होने कई संघर्ष कर अपने अस्तित्व को बचाये रखा। मीणा शब्द की उत्पति धर्मशास्त्राो में भगवान विष्णु के मत्स्यवतार से हुई। जिसे हिन्दी में मछली कहा जाता है वही दक्षिणी व संस्कृत भाषा में मीन कहते है। मीन से मीना व मीना से अपभ्रंश होकर मीणा शब्द बना है। राजस्थानी भाषा में 'न' को 'ण' कहकर बोला जाता है जैसे – जन–जण, नेन–नैण, मनक–मणक। ''राजस्थानी भाषा में अनेकानेक जगहो पर 'मीण' शब्द 'मीन' के शब्द रूप में ही उल्लिखित हुआ है।''[4]

इतिहासकार हरमन गाइन में अपनी पुस्तक ''द आर्ट एण्ड आर्किटेकचर ऑफ बीकानेर'' में सिंधुघाटी में प्राप्त मुहरो के आधार पर लिखा है – ''मीणा जनजाति के लोग उस मत्स्य जनजाति की ही सन्तान है जो राजा सुदास (आर्य) के द्वारा परास्त की गई थी और जो बाद में महाभारत के युद्ध में शामिल हुई थी।''[5]

मीणाओ की प्राचीनता का प्रथम साक्ष्य माहनजोदडो से प्राप्त मुहरो पर अंकित चिन्ह मछली से मीणाओ के अस्तिव का प्रमाण मिलता है। वैदिक काल में मीणो की उपस्थिति का उल्लेख ऋग्वेद में 'मेनि' शब्द का बार–बार उल्लेख आता है। 'मेनि' का शब्दार्थ 'ब्रज' या 'ब्रजकाय'[6]

उत्तर वैदिक काल से लेकर महाजनपद काल तक मत्स्य राज्य का उत्तर भारत में स्वतंत्र अस्तित्व बना रहा था।[7]

इस प्रकार कह सकते है कि राजपूतो के आगमन से पूर्व मीणा राजस्थान की प्रसिद्ध शासक जाती थी। मीणा जनजाति के विस्तार को लेकर चर्चा करे तो इनका उदगम् भारतवर्ष के माहनजोदडो सभ्यता क्षेत्र था उस सभ्यता के पतन के साथ मीणा जनजाति पंजाब के रास्ते उत्तर भारत में प्रवेश कर मत्स्य राज्य की स्थापना की। वहाँ से मीणा जनजाति दो भाग मे बट गई। एक अरावली के सहारे–सहारे पश्चिम की तरफ बढ़ी जिसके प्रमाण के रूप मे वर्तमान में दक्षिण राजस्थान तक उनकी बहुलता है तथा वहॉ नीचे मैदानी क्षेत्र में उतर कर अपनी राजनीतिक प्रभुता स्थापित की जो राजपूतो के आगमन से पूर्व तक स्थापित थी। दूसरी शाखा वही से दक्षिण की तरफ बढ़ी जो कालान्तर में पाण्डय कहलाये।

''दक्षिण में पाण्डया राजा को भी मीणा बताया गया है। वैलूर नगर का भी उस समय वर्णन मिलता है जो मीणा लोगों की एक रियासत थी''[8]

इतिहासकार मगलचंद मीणा ने भारत का जनजातिय इतिहास में मीणा व पाण्डयो के बीच बहुत सी समानताए बताई है जैसे :– मीणा व पाण्डयो का चिन्ह मछली का होना, महाभारत काल में पाण्डय मथुरा के समीप व मीणा मत्स्य राज्य पर अधिकार था, अतीत में दोनों जातियो के लिए 'मारन' शब्द की संज्ञा आदि कई समानताए थी

जैसा की ऊपर बताय जा चुका है कि मीणाओ की एक शाखा अरावली के सहारे–सहारे दक्षिण राजस्थान तक पहुँच कर मैदानी इलाको में उत्तर गई थी जो क्षेत्र वर्तमान राजस्थान के पाली, सिरोही व जालोर के अन्तर्गत पड़ता है। वह गोडवाड़ क्षेत्र कहलाता है। संघर्ष की मार झेलते यहाँ तक पहुँचे मीणाओं ने इन क्षेत्रो के वर्तमान सिरोही, जालोर, नाडोल जैसे क्षेत्रो पर अपनी सत्ता स्थापित की। चूंकि राजूतो का आगमन 10वी शताब्दी से पूर्व दृष्टिगोचर नहीं होता है। इससे पूर्व इन क्षेत्रों पर मीणा जनजाति काबिज थी जिसके कुछ प्रमाण हमे मिले है। मथुरालाल शर्मा द्वारा लिखित 'कोटा राज्य का इतिहास' पुस्तक में लिखा गया है कि ''इस प्रकार शत्रुओ को धोखा देकर मारना शायद चौहान राजपूतो की युद्ध युक्ति रही हो, क्योंकि कहा जाता है कि भीलो से कोटा और मीणो से सिरोही भी इस प्रकार ली गई थी''[9] ऊपर दिये दृष्टांत की पुष्टि एक अन्य साक्ष्य से होती है। जिससे कहा गया है कि ''सिरोही को मीणो का देश बताते हुए उनके धनुष–बाणो की तारीफ विद्वानो ने की है।''[10]

पृथ्वीराज रासो में मण्डोर के नाहरराय (नागभट्ट) प्रतिहार पर पृथ्वीराज के आक्रमण का वर्णन करते हुए नाहरराय के मित्र पर्वतराय नामक मीना मुखिया और उसके सिपाहियो का गौरवपूर्ण उल्लेख किया है।[11]

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उस समय मारवाड़ में पर्वतराय मीणा जैसे शक्तिशाली शासक मौजूद थे जिनके पास स्वंय अपनी सेना थी जिससे नागभट्ट प्रतिहार जैसे शासक की मदद का उल्लेख मिलता है जिससे स्पष्ट होता है कि उस समय मारवाड़ क्षेत्र में मीणा शक्तिशाली सैन्य ताकत के रूप में उपस्थित थे।

गोडवाड़ के मीणो का शक्ति का अन्य केन्द्र जालोर था जिसका उल्लेख मीणाओ के भाटो और ढोलियो द्वारा गुणगान किया जाता है। जिसमें सुटरा गोत्र के जालजी मीणा द्वारा जालौर तथा डियारसा गोत्र के मेवसिंह ने भाद्राजूण के निकट मेवा गांव बसाया जाना बताया गया जाता है।[12]

कई अन्य स्थानो पर जालजी मीणा को 'जला मीणा' भी कहा जाता है। इतिहास आर एस मन ने अपनी पुस्तक ''Tribal Cultures And Change'' में लिखा है कि '' Jala Mina is held responsible for settling Jalor''.[13]

गोडवाड़ क्षेत्र का प्रसिद्ध शक्ति केन्द्र नाडोल था यहाँ मेद (मीणा) जाति के अधिकार में होना पाया जाता है। लेखक बिन्धयराज चौहान कृत पुस्तक माँ आशापुरा का मन्दिर तथा नाडोल का राजवंश पुस्तक में लिखा है कि चौहान शासक को नाडोल पर अधिपत्य से पहले उसे मेदो (मीणा) से भीषण संघर्ष करना पड़ा। जो सिद्ध करता है कि नाडोल पर मीणो का अधिकार था। हालांकि इस पुस्तक में नाडोल पर सामन्तसिंह चावडा का अधिकार होना बताया है। अब यहाँ सवाल यह उठता है कि यहाँ का शासन यदि सामन्त सिंह था तो चौहान लाखन (लक्ष्मण) को मेदो (मीणो) से संघर्ष क्यों करना पड़ा। मेदो को हराकर ही नाडोल में चौहान वंश की स्थापना क्यों की ? सीधे सामन्त सिंह से ही युद्ध कर उसे क्यों नहीं हराया गया। जो भी हो सत्य यह है कि नाडोल क्षेत्र पर मीणो का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष शासन था इन्हे हराये बिना शासन स्थापित नहीं किया जा सकता था। दूसरा सवाल उठता है कि यहाँ मीणो को मात्र लुटेरा बताकर प्रजा को कष्ट देने वाले बताया गया है। यदि मीणा मात्र लुटेरे होते तो उनकी संख्या शायद दस, बीस, पचास या सौ होगी। इससे तो सामन्त सिंह भी निपट सकता था तो फिर चौहान लक्ष्मण को माँ आशापुरा से प्रार्थना क्यों करनी पड़ी । पुस्तक के अनुसार माँ आशापुरा लक्ष्मण के स्वप्न में प्रकट हुई और कहा ''पुत्र! निराश मत हो। मै तुम्हे महान बनाऊँगी। बहुत शीघ्र मालव देश से असंख्य छोडे तेरे पास आयेगे। तुम उनके ऊपर केसर मिश्रित जल छिडक देना जिससे उन घोडो का प्राकृतिक रंग बदल जायेगा। उन घोडो को प्राप्त कर एक अजेय सेना तैयार करो।''[14]

मात्र मीणा लुटेरो के लिए आशापुरा माँ सेना तैयार करने के लिए कहती है। जो अगले दिन सच होती है। डॉ. दशरथ शर्मा ने उन घोडो की संख्या बाहर हजार व मुहणोत नैणसी तेरह हजार संख्या बताते है। यह तो केवल घोडो की संख्या है इसके अलावा लक्ष्मण की सेना मे पैदल सैनिक भी रहे होगे तो सेना की संख्या और भी बढ सकती है। तो मात्र मीणा लुटेरो के लिए इतनी बढ़ी सेना तैयार करना प्रश्न खडा करता है। चौहान लक्ष्मण ने अपनी सेना तैयार की होगी तो सामने मीणो की भी निष्चित ही व्यवस्थित सेना होगी तभी तो मीणो से भीषण संघर्ष करना पड़ा। अन्य तर्कहीन व कपोल कल्पित बाते है जो प्राचीन आदिवासी मीणो के शासन को अशांतिप्रिय व अन्यायिक शासन बताकर

चौहान लक्ष्मण ने जनता के मध्य अपनी वैद्य सत्ता स्थापित की। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार अग्रेंजो ने भारतीयो को असभ्य बताकर लोगो के बीच अपनी वैद्यता प्राप्त की (श्वेतभार का सिद्धान्त)। ऊपर दिये नाडोल के प्रंसग से मिला–जुला अन्य प्रंसग गोडवाड़ के पाली क्षेत्र से भी सम्बंधित है। धुव्र भट्टाचार्य कृत राजस्थान का पुरातत्व एवं इतिहास भाग दो में लिखा है कि विक्रम संवत 1212 (सन् 1156 ई.) में राठौड वंश के संस्थापक सीहाजी द्वारका से गंगा की यात्रा में पाली से गुजरने के दौरान पालीवाल बाह्मणो के प्रतिनिधि मण्डल ने प्रार्थना कर ''अरावली के मीणे जो लूटपाट करते है उनसे जान बचाने की प्रार्थना की।'' अंत में सीहाजी द्वारा मीणाओ का उन्मूलन किया गया।[15]

पाली पर सीहाजी का अधिकार हो गया। इस प्रकार प्राचीन काल में इन क्षेत्रो पर काबिज मीणाओ को मात्र लुटेरे घोषित कर अपनी वैद्यता स्थापित की। जैसे नाडोल पर चौहान लक्ष्मण द्वारा की गई। किसी भी क्षेत्र पर अधिकार के लिए वहाँ स्थापित पूर्व शक्ति–सत्ता को हराकर ही अधिकार किया जा सकता है। ऐसा तो था नहीं कि राजपूतो से पूर्व यह क्षेत्र खाली व वीरान पड़े हो और राजपूत सीधे आकर गद्दी पर बैठ गए हो। हो सकता है कि मीणा अप्रत्यक्ष शासन अर्थात् कर लेकर छोड़ देते हो या समानान्तर शासन रहा हो।

सभी उद्धरणो से निष्कर्ष निकलता है कि राजपूतो के आगमन से पूर्व गोड़वाड़ में मीणा जाति काबिज थी। इस मीणा शक्ति को हराकर ही चौहान लक्ष्मण को नाडोल तथा राठौड सीहाजी को पाली पर अधिकार प्राप्त हुआ। मीणा हारने के बाद भी राजपूतो के अधीन नहीं हुए व इन्हे हमेशा चुनौती देते रहे।

कालान्तर में इतिहास लेखन की परम्परा में मीणा इतिहास को तोड़ मरोड कर लिखा गया ताकि इनमें हीन भावना पैदा हो और भविष्य में सिर उठा न सके। गोडवाड़ के शासक मीणाओ की मैल से उत्पति बताई गई, इन्हे राजपूतो की अवैध संतान कहा गया जो पूर्णत्या असत्य व काल्पनिक है। जहाँ राजपूतो की उत्पति के साक्ष्य 10वी सदी के बाद दिखाई देते है वहीं मीणा जनजाति सिन्धु सभ्यता से पूर्व ही भारतवर्ष में मौजूद थी और मीणा उन मूलनिवासियो की संन्तान है।

संदर्भ

1. रमेशचन्द्र गुणार्थी, राजस्थानी जातियो की खोज, प्रकाशन, संस्करण, पृ. 91
2. मीना जनजाति का इतिहास, शंकरलाल मीणा, प्रथम संस्करण 2019, लिटरेरी सर्किल प्रकाशन जयपुर, पृ. 374
3. रावत सारस्वत, मीणा इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, तृत्तीय संस्करण 2012 पृ. 107
4. राम गोपाल मीना व हर्ष मीना, मीना जनजाति एवं ब्रिटिश राज, राज पब्लिशिंग हाउस जयपुर संरकरण 2014, पृ.1
5. शोधा मीणा मीणा जनजाति का इतिहास जयपुर पब्लिशिंग हाउस जयपुर, प्रथम प्रमाण 2023, पृ. 6
6. राम गोपाल मीणा व हर्व मीणा, मीना जनजाति एवं ब्रिटिश राज, राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, संस्करण 2014, पृ.5
7. वही, पृ. 12
8. यशोदा मीणा, मीण जनजाति का इतिहास, जयपुर पब्लिशिंग हाउस जयपुर, सरकरण प्रथम, 2013 पृ. 12
9. सं. जगतनारायण मधुरालाल शर्मा कृत कोटा राज्य का इतिहास राजस्थानी एण्थागार जोधपुर, द्वित्तीय संस्करण 2008, पृ. 36
10. रावत सारस्वत, मीणा इतिहास, राजस्थानी गृन्थागार जोधपुर, तृत्तीय संस्करण 2012, पृ. 116
11. वही पृ. 108
12. Link - https://youtube.be/rgd7rws1vng
13. RS Mann, K Mann, Trible cultures and change, Mittal Publications, New Delhi, REirst edition 1989, Page - 17
14. बिन्धाराज चौहान, माँ आशापुरा का मन्दिर तथा नाडोल राजवंश, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, द्वित्तीय संस्करण 2009, पृ. 26
15. शुव्र भट्टाचार्य, राजस्थान का पुरातत्व एवं इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, प्रथम संस्करण 2021, पृ. 190